

उत्तर प्रदेश में क्षुद्रग्रह की खोज

चर्चा में क्यों?

हाल ही में [राष्ट्रीय वैमानिकी एवं अंतरिक्ष प्रशासन \(National Aeronautics and Space Administration- NASA\)](#) ने नोएडा के कक्षा 9 के छात्र दक्ष मलिक को एक [क्षुद्रग्रह](#) की अनंतमि खोज के लिये मान्यता प्रदान की गई है, जसि वर्तमान में '2023 OG40' के रूप में लेबल किया गया है।

मुख्य बडि

- अंतरराष्ट्रीय क्षुद्रग्रह खोज परियोजना (IADP) में भागीदारी:
- दो स्कूली मतिरों के साथ, छात्र ने IADP में सक्रिय रूप से भाग लिया, जसिने उन्हें अंतरराष्ट्रीय खगोलीय खोज सहयोग (IASC) से परिचित कराया।
- IASC, एक NASA-संबद्ध नागरिक विज्ञान पहल है, जो क्षुद्रग्रह खोज में वैश्विक भागीदारी को सक्षम बनाती है।
- यह विश्वभर के छात्रों और खगोल विज्ञान के प्रती उत्साही लोगों को आकाशीय डेटा का विश्लेषण करने और वैज्ञानिक अनुसंधान में योगदान करने का अवसर प्रदान करता है।
- एक दुर्लभ उपलब्धि:
- प्रतविर्ष 6,000 से अधिक प्रतभागियों के IADP में शामिल होने के बावजूद, केवल कुछ ही नए क्षुद्रग्रहों की पहचान करने में सफल होते हैं।
- इस खोज से पहले, देश के केवल पाँच छात्रों ने कभी नामित क्षुद्रग्रह की खोज की थी।
- क्षुद्रग्रह का नामकरण:
- इस उपलब्धि से [खगोलीय पडि](#) का सत्यापन प्रक्रिया के पश्चात नामकरण करने का विशेषाधिकार भी प्राप्त होता है, जसिमें लगभग चार से पाँच वर्ष का समय लग सकता है।

क्षुद्रग्रह

- क्षुद्रग्रह, जिन्हें लघु ग्रह भी कहा जाता है, लगभग 4.6 अरब वर्ष पहले हमारे सौरमंडल के निर्माण के प्रारंभिक चरण के अवशेष हैं।
- वे मुख्यतः अनियमित आकार प्रदर्शति करते हैं, हालाँकि कुछ लगभग गोलाकार रूप भी प्रदर्शति करते हैं।
- कई क्षुद्रग्रहों के साथ छोटे चंद्रमा भी होते हैं, यहाँ तक कि कुछ के तो दो चंद्रमा भी होते हैं।
- इसके अतिरिक्त, द्वा-क्षुद्रग्रहों में एक दूसरे की परकिरमा करने वाले दो समान आकार के चट्टानी पडि शामिल होते हैं तथा त्रि-क्षुद्रग्रह प्रणालियाँ भी होती हैं।